ओम् शान्ति 24-1-12 मधुबन

## 30 से 40 वर्ष तक की समर्पित बहिनों प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

**– गुल्जार दादी**

आज अमृतवेले बापदादा के पास गई तो दूर से ही सामने जाते बापदादा की दृष्टि मिलते ही बाहों के अमूल्य हार में समा गई और लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, ``मेरी दिलतख्तनशीन बच्ची'' आज क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आज तो 30 से 40 वर्ष वाली टीचर्स की याद लाई हूँ। उन्हों का सम्मान समारोह कर रहे हैं। सब बहुत उमंग-उत्साह में हैं कि अब तो बाबा की आश जरूर पूरी करेंगे। यह उमंग-उत्साह के बोल सुन बाबा बोले, यही संगठन तो यज्ञ साथी विशेष सेवा साथी है। उसके बाद बाबा बोले इन बच्चों को बाबा आज वतन में बुलाकर मिलन मनाते हैं। बस बाबा का कहना और सभी बहिनों का ग्रुप इमर्ज होना। सब अर्ध चन्द्रमा के रूप में 4 लाइन में ऐसे खड़े थे जैसे बाबा के गले का हार बन गये। बापदादा भी हर बच्चे को बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे और सब मिलन की लगन में लवलीन थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, देखो बच्ची बापदादा देख रहे हैं कि हर बच्चे की लगन यही है कि अब कुछ करके दिखाना है लेकिन सेवा पर जाते दृढ़ संकल्प साधारण संकल्प हो जाता है क्योंकि वहाँ के वातावरण के प्रभाव में आ जाते हैं लेकिन बाबा यही चाहते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल वहाँ सेवास्थान पर और सब साथियों को, आने वालों को अनुभव करावें। बाप जानते हैं कि बातें तो सामना करेंगी लेकिन बाप का साथ है तो क्या बड़ी बात है। अपना बाप से किया हुआ वायदा पूरा करके दिखाना है। ऐसी बातें सुन सभी बहिनों की सूरत ऐसे स्नेह में समा गई जो ऐसे लग रहा था जैसे दिल ही दिल में सब कह रही हों बाबा हम करके ही दिखायेंगे और बाबा भी हर एक को बहुत बहुत लवलीन रूप से सकाश दे रहे थे।

उसके बाद बाबा ने दादी जानकी, रतनमोहिनी आदि सबको इमर्ज किया और बहुत स्नेह से मिलन मनाते बोला बच्चियां बहुत बाप के दिल में रहने वाली अनन्य हैं। फिर बाबा ने कहा चलो आज बाबा आपको वतन की सौगात देते हैं। तो सौगात क्या थी! शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का चित्र, उसमें शिवबाबा हीरे का था, ब्रह्मा बाबा भी हीरे का था, जो बाबा एक एक को हाथ से देते मिलन मनाते रहे। उसके बाद सबको दृष्टि देते मर्ज कर दिया और हमको भी दृष्टि देते साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।